McDonald's
सक्सेस STORY

विश्वप्रसिद्ध बर्गर कंपनी की शिखरगाथा

प्रभात

प्रदीप ठाकुर

McDonald's

सक्सेसStory

(विश्वप्रसिद्ध बर्गर कंपनी की शिखरगाथा)

प्रदीप ठाकुर

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

मेरी पूर्णकालिक लेखन-यात्रा को
संभव बनानेवाली धर्मपत्नी किरण **और**
मुझे हमेशा उत्साहित रखनेवाले
सुपुत्रों प्रभाकर, पुष्कर **व** भाष्कर
को
सस्नेह समर्पित

भूमिका

मैकडोनाल्ड्स को सेवा (सर्विस) ब्रांड माना जाता है। मई 2017 में 'फोर्ब्स' पत्रिका ने 3 प्रतिशत वार्षिक बढ़त के साथ मैकडोनाल्ड्स का ब्रांड मूल्य 40.3 अरब डॉलर व ब्रांड राजस्व 85 अरब डॉलर आँका था और विश्व के 100 सबसे मूल्यवान ब्रांड सूची में नौवें स्थान पर रखा था। मैकडोनाल्ड्स मूल्य व राजस्व दोनों दृष्टियों से रेस्तराँ उद्योग के अपने दो निकटतम प्रतिद्वंद्वियों—स्टारबक्स (ब्रांड श्रेणी क्रम : 35; ब्रांड मूल्य : 14.9 अरब डॉलर; ब्रांड राजस्व : 20.8 अरब डॉलर) व सबवे (ब्रांड श्रेणी क्रम : 92; ब्रांड मूल्य : 7.1 अरब डॉलर; ब्रांड राजस्व : 17 अरब डॉलर) से बहुत ही आगे चल रही थी, लेकिन 2015 की तुलना में, 2017 की विश्व के 100 सबसे मूल्यवान ब्रांड सूची में मैकडोनाल्ड्स छठे से नौवें स्थान पर आ गया था।

इसका मूल कारण यह था कि मैकडोनाल्ड्स के तीन सबसे प्रमुख बाजारों अमेरिका (14,267 रेस्तराँ), जापान (3,164 रेस्तराँ) व चीन (2000+ रेस्तराँ) में उसके कारोबार का संतृप्ति-स्तरों (सेचुरेशन लेवल) के ऊपर चले गए थे और उसका राजस्व 2013 (31 दिसंबर तक) के उच्चतम स्तर 28.106 अरब डॉलर से घटकर 2014 में 27.144 अरब डॉलर और शुद्ध लाभ 5.586 अरब डॉलर से घटकर 4.758 अरब डॉलर रह गया था। यही कारण था कि 2015 की शुरुआत में मैकडोनाल्ड्स ने अपने 36,258 रेस्तराओं (कंपनी संचालित : 6,714; फ्रेंचाइजी : 29,544) के विश्वव्यापी-संजाल में से 700 को बंद करने का विचार प्रकट किया था, जिनमें से आधे अमेरिका के ही थे। वर्ष 2015 में, मैकडोनाल्ड्स के राजस्व 25.413 अरब डॉलर व शुद्ध लाभ 4.529 अरब डॉलर रह गया था। हालाँकि, 2016 में राजस्व और गिरकर 24.622 अरब डॉलर रह गया था, लेकिन शुद्ध लाभ मामूली बढ़त के साथ 4.687 अरब डॉलर के स्तर पर चला आया था, और फोर्ब्स ने मैकडोनाल्ड्स के ब्रांड मूल्य को 3 प्रतिशत बढ़ा दिया था। रोचक तथ्य यह है कि इन दो वर्षों में मैकडोनाल्ड्स ने कंपनी संचालित रेस्तराओं की संख्या 1045 घटाकर 5669, जबकि फ्रेंचाइजी रेस्तराओं की संख्या को 1686 इकाइयाँ बढ़ाकर 31,230 कर लिया था; लेकिन कुल कर्मचारियों की कुल संख्या को 4.20 लाख से घटाकर 3.75 लाख कर लिया था। इस प्रकार, 31 दिसंबर, 2016 तक, मैकडोनाल्ड्स के रेस्तराओं कुल संख्या 641 इकाइयों की बढ़त के साथ 36,899 हो गई थी, और कंपनी का वित्तीय भविष्य एक बार फिर से पटरी पर आता दिखने लगा था।

जी हाँ, विश्व में चंद ब्रांड ही ऐसे हैं, जो मैकडोनाल्ड्स से अधिक पहचाने जाते हैं। सच तो यही है कि अब सलीब में टँगे ईसामसीह का चित्र की तुलना में मैकडोनाल्ड्स के सुनहरे मेहराव (गोल्डन आर्चेज) को ज्यादा लोग पहचानते हैं। ध्यान देने की बात यह भी है कि चाहे वे वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) का विरोध करनेवाले सामाजिक कार्यकर्ता हों या सरकारी स्वास्थ्य अधिकारी या फिर बच्चों के मोटापे को लेकर चिंतित माता-पिता मैकडोनाल्ड्स सभी दिशाओं से विरोध को झेलता हुआ आगे बड़ा है। यही कारण है कि मैकडोनाल्ड्स को बहुधा विश्व का सबसे अधिक घृणा किए जानेवाला ब्रांड भी कहा जाता है, लेकिन इन विरोधों के बाद भी मैकडोनाल्ड्स विश्वव्यापी ब्रांड के रूप में अपने प्रभाव को कायम रख सका है, तो इसका प्रमुख कारण उसकी जनसंपर्क रणनीति रही है। रोनाल्ड मैकडोनाल्ड हाउस चैरिटीज (आर.एम.एस.सी.) के अंतर्गत दुनिया के 57 देशों में 322 घर से बाहर घर संचालित किए जा रहे थे, जिनमें नजदीकी अस्पतालों में अपने बच्चों का इलाज करा रहे जरूरतमंद परिवारों को हर रात कुल 7200 शयन-कक्षों की सुविधा प्रदान की जा रही थी। इसके अलावा भी मैकडोनाल्ड्स कंपनी स्तर पर व क्रोक फाउंडेशन के माध्यम से कई तरह के सेवाकार्यों को आर्थिक सहायता प्रदान करता है।

मुझे विश्वास है कि मैकडोनाल्ड्स की अपार सफलता की कहानी हमारे सभी सुधी पाठकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

—प्रदीप ठाकुर

1

त्वरित खाद्य रेस्तराँ शृंखला मैकडोनाल्ड्स की शुरुआत

15 मई, 1940 को अमेरिका के सैन बर्नार्डिनो (दक्षिण कैलिफोर्निया) में मैनचेस्टर (न्यू हैम्पशायर) निवासी रिचर्ड व मौरिस मैकडोनाल्ड भाइयों ने 'मैकडोनाल्ड्स' रेस्तराँ अवधारणा की स्थापना की थी। शुरू में यह भुने मांस (बारबेक्यू) व्यंजनों का रेस्तराँ था, जिसमें मुख्य रूप से वाहन-सवार ग्राहकों को कारहॉप (महिला-पुरुष बैरा) दल के जरिए सेवाएँ दी जाती थीं, लेकिन 1948 में मैकडोनाल्ड भाइयों ने इसकी रसोई प्रक्रिया में संयोजित उत्पादन शृंखला (असेंबली प्रोडक्शन लाइन) सिद्धांतों का उपयोग कर अपने कारोबार को स्वयं-सेवा (सेल्फ सर्विस) वाले त्वरित खाद्य (फास्ट फूड) हैम्बर्गर अड्डे के रूप में पुनर्गठित किया था।

शिकागो के पश्चिमी शहर लाइन से सटे गाँव ओक पार्क (कुक काउंटी, इलिनोइस) के मल्टी-मिक्सर व्यवसायी रेमंड अल्बर्ट 'रे' क्रोक को मैकडोनाल्ड भाइयों के कारोबार में भारी संभावना नजर आई थी। क्रोक ने राष्ट्रीय विशेष अधिकार प्रतिनिधि (नेशनल फ्रैंचाइजी एजेंट) के रूप में मैकडोनाल्ड्स सिस्टम इनकॉरपोरेशन का गठन किया था। 15 अप्रैल, 1955 को शिकागो ओहारे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नजदीकी कस्बे डेस प्लेन्स (400 नॉर्थ ली एवेन्यू) में अपनी कंपनी के पहले विशेष अधिकार मैकडोनाल्ड्स रेस्तराँ की शुरुआत की थी। 1961 में क्रोक ने 27 लाख डॉलर में मैकडोनाल्ड्स भाइयों से सारा कारोबार खरीद लिया था और अपनी कंपनी का नाम बदलकर मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन कर लिया था।

14 जनवरी, 1984 में रे क्रोक की मृत्यु के ठीक पहले 31 दिसंबर, 1983 तक दुनिया के 32 देशों में 7778 मैकडोनाल्ड्स रेस्तराओं की शृंखला स्थापित हो चुकी थी, जो 31 मार्च, 1984 तक 7819 हो गई थी व समूह का कुल राजस्व 2.20 अरब डॉलर के स्तर पर पहुँच गया था। 2013 में दुनिया के 119 के 35 हजार से अधिक रेस्तराओं में मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन रोजाना औसतन 6.80 करोड़ ग्राहकों की सेवा कर करीब 28.11 अरब डॉलर के कारोबार पर 5.58 अरब डॉलर का मुनाफा अर्जित कर रहा था।

60 साल पुराने जटिल निगमित सार्वजनिक ढाँचे में रहने व बहुराष्ट्रीय विस्तार के बावजूद मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन ने अपनी विशिष्ट सहभागितापूर्ण प्रबंधन प्रणाली के जरिए मौलिक उद्यमशीलता को जीवंत व जवान बनाए रखने में कामयाबी हासिल की है।

मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन दुनिया की सबसे बड़ी त्वरित खाद्य सेवा (फास्ट फूड सर्विसेज) रेस्तराँ-शृंखला है, जो विशेष अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि (फ्रैंचाइजी), सहभागी (एफिलिएट) या स्वयं कंपनी द्वारा संचालित की जाती है। इसका राजस्व किराया, स्वत्वाधिकार (रॉयल्टी), प्रतिनिधि शुल्क (फ्रेंचाइजी फीस) के भुगतान व स्वयं संचालित रेस्तराओं में बिक्री से आता है। इन रेस्तराओं में मुख्य रूप से हैम्बर्गर (गौ/सूअर/बकरा/ मुरगी मांस कीमा की तली पट्टी/पैटी से बना बर्गर), चीज बर्गर (पनीर पट्टीवाला बर्गर), फ्रेंच फ्राइज (गहरे तले आलू की डंडियाँ), मुरगी खाद्य (चिकन फूड) नाश्ता सामग्रियाँ, शीतल कार्बनयुक्त पेय (सॉफ्ट ड्रिंक्स), दूध-मलाई पेय (मिल्क शेक) व मीठे खाद्य पदार्थ (डेजर्ट) परोसे जाते हैं। क्षेत्रीय स्वादानुसार खाद्य-सूची (फूड मेनू) में सलाद, मछली खाद्य (फिश फूड), सैंडविच व्रैप (सपाट रोटी में कटा मांस, अंडा, मछली या पनीर आदि लपेट कर तैयार सैंडविच), ताजे फलों व दूध के गाढ़े-मीठे पेय (स्मूदी) आदि भी जोड़े जाते हैं।

मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन अमेरिकी कारोबारी सपनों के विश्वव्यापी विस्तार की अद्‌भुत व प्रेरणादायक कहानी है। इसने न केवल आलू व मांस प्रसंस्करण उद्योग सहित त्वरित खाद्य सेवा उद्योग को अत्याधुनिक बनाने, बल्कि अमेरिकी खाद्य-व्यवहार को ही बदलने में परिवर्तन-कारक (चेंज एजेंट) की भूमिका अदा की थी। खाद्य-प्रौद्योगिकी (फूड टेक्नोलॉजी) में लगातार गंभीर अनुसंधान व विकास (रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट) की बदौलत मैकडोनाल्ड्स हमेशा अपने प्रतिस्पर्धियों के लिए चुनौती बना रहा है, साथ ही 60 साल पुराने जटिल निगमित सार्वजनिक ढाँचे में रहने व बहुराष्ट्रीय विस्तार के बावजूद मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन ने अपनी विशिष्ट सहभागितापूर्ण प्रबंधन प्रणाली (पार्टिसिपेटरी मैनेजमेंट सिस्टम्स) के जरिए मौलिक उद्यमशीलता को जीवंत व जवान बनाए रखने में कामयाबी हासिल की है।

आइए हम आपको मैकडोनाल्ड्स शृंखला की रोमांचकारी व प्रेरक व्यावसायिक विकास-यात्रा पर लिए चलते हैं।

मैकडोनाल्ड्स-भाइयों की अपार सफलता

मैकडोनाल्ड्स रेस्तराँ शृंखला की अभूतपूर्व सफलता ने रे कॉर्क की व्यक्तिगत छवि को इतना विशाल बना दिया कि आमतौर पर लोग उसी को 'त्वरित खाद्य' (फास्ट फूड) व स्वयं सेवा रेस्तराँ (सेल्फ सर्विस रेस्टोरेंट) के आविष्कारक मान लेते हैं, लेकिन कॉर्क ने इन दोनों में किसी का भी आविष्कार नहीं किया था। इतना ही नहीं, 15 अप्रैल, 1955 को कॉर्क ने शिकागो के उत्तर-पश्चिमी उपनगर डेस प्लेंस में विशेष अधिकार रेस्तराँ (फ्रैंचाइजी रेस्टोरेंट) की शुरुआत थी, जो अब संग्रहालय में बदला जा चुका है, उसको पहला मैकडोनाल्ड्स रेस्तराँ मान लिया जाता है, लेकिन पहले व असली मैकडोनाल्ड्स रेस्तराँ की स्थापना रे कॉर्क के रेस्तराँ के सामने आने से पहले 15 मई, 1940 में सैन बर्नार्डिनो

(कैलिफोर्निया) में हुई थी और त्वरित खाद्य सामग्रियों व स्वयं-सेवा रेस्तराँ के शुरुआती आविष्कार व कारोबार विकास का श्रेय दो भाइयों—रिचर्ड जेम्स 'डिक' मैकडोनाल्ड (16 फरवरी, 1909—14 जुलाई, 1998) व उसके बड़े भाई मौरिस जेम्स 'मैक' मैकडोनाल्ड (26 नवंबर, 1902—11 दिसंबर, 1971) को जाता है।

डिक व मैक स्वप्नदर्शी थे। डेढ़ दशकों की अथक मेहनत व लगन से उन्होंने खाद्य सामग्रियों के उत्पादन में अनोखे प्रयोग किए थे और अपने रेस्तराँ मैकडोनाल्ड्स को बेहद संभावनाशील खाद्य-कारोबार में बदल दिया था, लेकिन उनमें अपने आविष्कारों को भुनाने की तीव्रता व संगठन-कौशल (आर्गेनाइजेशन स्किल) का अभाव था। उन्हें उम्मीद से ज्यादा आर्थिक सफलता हासिल हो गई थी और नि:संतान होने के चलते वे आत्म-संतोषी भी हो चुके थे। (डिक को एक सौतेला बेटा था) इसके उलट, रे कॉर्क बेहद महत्त्वाकांक्षी विक्रेता था; वह जिंदगी भर एक के बाद दूसरे अवसरों का पीछा करता रहा था, 50 से ज्यादा उम्र के हो जाने के बावजूद उसकी कारोबारी तीव्रता जवान थी और वह आला दर्जे का संगठक था। लिहाजा उसने मैकडोनाल्ड भाइयों की अनोखी खोज को महज पाँच वर्षों में आश्चर्यजनक रूप से सफल पेशेवर कारोबारी ढाँचे में ढाल दिया था।

ऐसे में, भाइयों की आँखें चौंधियाने लगी थीं, वे लालची हो गए थे और उन्होंने कॉर्क के सपनों के रास्ते में कानूनी बाधाएँ खड़ी करने की कोशिशें की थीं। कॉर्क के लिए यह जीवन-मरण का सवाल था और उसने अपनी क्षमता से कई गुना ज्यादा बड़ा 27 लाख डॉलर का कर्ज उठाने का दुस्साहस किया था। कॉर्क ने दोनों भाइयों को मुँहमाँगी कीमत (जो उनकी सोच से बहुत ज्यादा बड़ी रकम थी) अदा की थी, और मैकडोनाल्ड को हमेशा के लिए अपना बना लिया। यदि कॉर्क ने दोनों भाइयों के लालच को पूरा करने का जोखिम नहीं उठाया होता तो शायद आज कोई मैकडोनाल्ड्स कॉरपोरेशन नामक संगठन नहीं होता। यही कारण है कि रे कॉर्क को अमेरिकी उद्यमशीलता का प्रतीक माना जाता है, लेकिन दोनों भाइयों के लालची व्यवहार से कॉर्क इतना दु:खी हुआ था कि उसने भाइयों की अंतिम निशानी पहले मैकडोनाल्ड्स रेस्तराँ को तबाह हो जाने के लिए मजबूर कर दिया था। आज जब 'मैकडोनाल्ड्स' रेस्तराँ शृंखला दुनिया भर में फैल चुकी है, उन दोनों भाइयों के मूल आविष्कार की कोई निशानी नहीं बच सकी है।

फिर भी, त्वरित खाद्य सेवा उद्योग के विकास में मैकडोनाल्ड भाइयों के योगदान व उनके आविष्कारों की अहमियत कम नहीं होती। वे अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि या प्रशिक्षण से रेस्तराँ कारोबारी नहीं थे। वे परंपराबद्ध खाद्य-सेवा व्यापार से संबद्ध नहीं थे कि उनमें उस व्यापार से संबंधित कोई क्रांतिकारी सोच पनप पाती। आमतौर पर रेस्तराँ पारिवारिक कारोबार है, जो सदियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होकर पनपता-फैलता रहा है, लेकिन मैक व डिक इस तरह की किसी परंपरा से बँधे नहीं थे। उनका जन्म पूर्वोत्तर अमेरिका के न्यू हैम्पशायर प्रांत के सबसे बड़े औद्योगिक शहर मैनचेस्टर में हुआ था। जी हाँ, इस शहर का विकास भी दुनिया के सबसे पहले औद्योगिक नगर मैनचेस्टर (उत्तर-पश्चिमी इंग्लैंड, यूनाइटेड किंगडम) की तर्ज पर ही किया गया था। उनके पिता स्थानीय जूता-फैक्टरी में अधिकर्मी (फोरमैन) थे, लेकिन प्रथम विश्व-युद्ध (28 जुलाई, 1914 से 11 नवंबर, 1918 तक) की भारी तेजी का दौर खत्म होने के बाद जब ब्रिटेन में महामंदी/ग्रेट डिप्रेशन (1929-31) का दौर शुरू हुआ था, तो मैनचेस्टर में भी रुई-धागा (कॉटन-स्पिनिंग) मिलों के साथ अन्य उद्योग भी बंद होने शुरू हो गए थे। इसमें मैकडोनाल्ड भाइयों के पिता को भी अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा था।

यह नौकरी मैकडोनाल्ड परिवार की आजीविका का एकमात्र जरिया थी। इसके बाद परिवार गंभीर संकट में आ गया था। दोनों भाई अपने परिवार का सहारा बनना चाहते थे, लेकिन उन्हें गृहनगर मैनचेस्टर या न्यू हैम्पशायर के अन्य नगरों में भविष्य की कोई संभावना नजर नहीं आ रही थी। उस वक्त कैलिफोर्निया नई संभावनाओंवाले प्रांत के रूप में विकसित हो रहा था। लिहाजा, 1930 में दोनों भाइयों ने कैलिफोर्निया का रुख किया था। जाहिर है कि वे सबसे पहले युवाओं के सपनों की नगरी व मनोरंजन उद्योग केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हॉलीवुड (लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया) की तरफ ही आकर्षित हुए थे। वे हॉलीवुड फिल्मों, खासतौर पर तमाशाई हास्य अभिनेता बेन टर्पिन की लघु फिल्मों के लिए दृश्य-मंच (सेट) निर्माण का काम करने लगे थे। तीन वर्षों में उन्होंने कुछ पूँजी जमा कर ली थी। वे फिल्म की संभावनाओं पर इतने मोहित थे कि उन्होंने नजदीकी कस्बे ग्लेनडेल (लॉस एंजिल्स नगर केंद्र से 16 कि.मी. उत्तर) में 100 डॉलर प्रतिमाह के किराए पर सिनेमा-घर का संचालन शुरू कर लिया था, लेकिन कारोबार इतना ढीला था कि वे अगले चार वर्षों में कभी भी समय से किराया नहीं चुका सके थे।

इस बीच दक्षिणी कैलिफोर्निया क्षेत्र में पूरी तरह से नई जीवनशैली का जन्म हुआ था, जिसने बिल्कुल नए तरीके के खान-पान को पनपने का मौका दिया था और यह सब कार के इर्द-गिर्द घूम रहा था। इस कार-संस्कृति ने त्वरित खाद्य सेवा (फास्ट फूड सर्विसेज) कारोबार को बढ़ावा दिया था। यह जल्द ही सबसे संभावनाशील उद्योग के रूप में विकसित हुआ था और देश के बाकी हिस्सों में फैलने लगा था। मैकडोनाल्ड भाइयों ने ग्राहकों के इस जुनून को भुनाने के इरादे से 1937 में पासाडेना (लॉस एंजिल्स नगर-केंद्र से 16 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित नगर) में एक मामूली सा वाहन-सवार रेस्तराँ (ड्राइव इन रेस्टोरेंट) खोला था। दोनों भाई खुद ही हॉटडॉग (हैम्बर्गर नहीं) व मिल्क शेक तैयार करते थे। उन्होंने ग्राहकों को बैठने के लिए चंदवा (कैनोपी) से ढकी एक दर्जन तिपाइयों का इंतजाम किया था और पार्किंग में वाहनों में बैठे ग्राहकों को तीन कारहॉप (कार में खाद्य-सेवा देने वाले बैरा) के जरिए हॉटडॉग व मिल्क शेक परोसना शुरू किया था।

लॉस एंजिल्स में कार-केंद्रित जीवनशैली का उत्थान : असल में, पूर्व समुद्रतटीय (ईस्ट कोस्ट) अमेरिका यानी अटलांटिक महासागर के किनारे बसे अमेरिकी प्रांतों—मैने, न्यू हैम्पशायर, मैसाचुसेट्स, रोड आइलैंड, कनेक्टिकट, न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, डेलावेयर, मेरीलैंड, वर्जीनिया,

नॉर्थ कैरोलिना, दक्षिण कैरोलिना, जॉर्जिया व फ्लोरिडा के अधिकांश शहरों का विकास रेलगाड़ी-युग में हुआ था। इन प्रांतों के महानगरों व मुख्य व्यावसायिक केंद्रों को रेल व ट्रालीकार/ट्राम सेवा से जोड़ा गया था। दक्षिण समुद्रतटीय (वेस्ट कोस्ट) अमेरिका यानी प्रशांत महासागर के किनारे बसे प्रमुख अमेरिकी प्रांतों—कैलिफोर्निया, ओरेगन व वाशिंगटन के अधिकांश इलाकों में विकास का यही क्रम जारी था। 1930 के दशक में, दक्षिणी कैलिफोर्निया के ग्रेटर लॉस एंजिल्स क्षेत्र पाँच राजनीतिक-भौगोलिक उपखंडों यानी काउंटी—लॉस एंजिल्स, ऑरेंज, सैन बर्नार्डिनो, रिवरसाइड व वेंचुरा में समूचे अमेरिका की तुलना में सबसे तेजी से विकास हुआ था, लेकिन इन नगरों का विकास तब हुआ था, जब मोटरवाहन सस्ते हो रहे थे। 1920 से 1930 के बीच, ग्रेटर लॉस एंजिल्स सहित कैलिफोर्निया के दक्षिण-पश्चिमी कोने में स्थित सैन डिएगो काउंटी क्षेत्र में बेहतर रोजगार व कारोबारी संभावनाओं के मद्देनजर समूचे अमेरिका से करीब 20 लाख लोगों का जमघट हो गया था।

एक बड़ा अंतर और था। पूर्व समुद्रतटीय अमेरिकी महानगरों का विस्तार दुनिया भर के आप्रवासियों के कारण हुआ था और वे क्षेत्र ज्यादा व्यापक थे, लेकिन दक्षिण कैलिफोर्निया में आनेवाले अधिकांश लोग मध्यमवर्गीय थे, जो महामंदी के चलते मध्य-पश्चिमी (मिडवेस्टर्न) अमेरिकी प्रांतों—इलिनोइस, इंडियाना, आयोवा, कान्सास, मिशिगन, मिनेसोटा, मिसौरी, नेब्रास्का, उत्तरी डकोटा, ओहियो, दक्षिण डकोटा व विस्कॉन्सिन से विस्थापित हुए थे। इनमें से अधिकांश गोरे अमेरिकी थे और खासतौर पर लॉस एंजिल्स इलाके में ज्यादा सजातीय समाज इकट्ठा हो गया था। समशीतोष्ण जलवायु व अच्छे जीवन का वादा करनेवाले अचल संपत्ति (रियल एस्टेट) विज्ञापनों से आकर्षित होकर अशक्त, सेवानिवृत्त लोगों के साथ-साथ छोटे व्यापारियों का बहुत बड़ा समुदाय दक्षिणी कैलिफोर्निया की तरफ रुख कर रहा था। यह पहला बड़े पैमाने का विस्थापन था, जो मुख्य रूप से कारों के जरिए हो रहा था।

जल्द ही लॉस एंजिल्स दुनिया के किसी भी अन्य नगरों के विपरीत एक ऐसे नगर के रूप में विकसित हो गया था, जैसा कि पहले कभी भी नहीं देखा नहीं जा सका था। यह अपने मूल जन्म स्थानों से बिछड़े व मोटरवाहनों के जरिए पनपे भविष्य के सपने सँजोए लोगों से पूरी तरह भरे विशाल व क्षैतिज उपनगरीय महानगर में बदल गया था। 80 फीसदी लोग कहीं और पैदा हुए थे; करीब आधे लोग पिछले पाँच वर्षों के दौरान यहाँ आए थे। लिहाजा लॉस एंजिल्स में जल्द ही एक ऐसी जीवन-संस्कृति उभरकर सामने आई थी, जिसमें कुछ भी नया करने के खुलेपन के साथ-साथ बेचैनी, अस्थायित्व व जल्दबाजी भी गुंथी हुई थीं। सस्ती कारें अमेरिका के दूसरे महानगरों की जीवनशैली को प्रभावित कर रही थीं, लेकिन लॉस एंजिल्स में यह गति काफी ज्यादा तेज थी। 1940 में लॉस एंजिल्स में करीब 10 लाख कारें थी, जो 41 अमेरिकी प्रांतों की कुल कारों से भी ज्यादा थीं।

मोटरवाहन वाहन चालकों को आजादी व नियंत्रण का एहसास मिला था। इसने दैनिक यात्रा को रेल की समय-सारणियों, ट्राली कारों के पड़ाव-स्थलों व दूसरे यात्रियों की परेशानियों से मुक्त कर दिया था। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि सार्वजनिक परिवहन (पब्लिक ट्रांसपोर्ट) की तुलना में कार-यात्रा ज्यादा सस्ती मालूम पड़ती थी। यह एक प्रकार का भ्रम था, क्योंकि कार की कीमत में नई सड़कों के निर्माण की लागत को शामिल नहीं किया गया था। असल में, पेट्रोलियम-उत्पाद, टायर, मोटरवाहन व संबंधित कल-पुर्जे उद्योगों के पक्ष-जुटानकर्ताओं (लाबीस्ट) ने अमेरिकी सरकार व संबंधित संघीय अभिकरणों (फेडरल एजेंसीज) को यह मान लेने के लिए फुसला लिया था कि सड़क-निर्माण की लागत अन्य मौलिक खर्चों में से एक थी। यदि ट्राली कार/ट्राम कंपनियों की पटरियाँ व ऊपरी तार (ओवरहेड वायर) बिछाने व उनके रखरखाव की लागत की तरह मोटरवाहन कंपनियों को भी सड़क निर्माण व रखरखाव का खर्च उठाना पड़ता तो उनकी हालत क्या होती?

'किर्बीज पिग स्टैंड' को अमेरिका की पहली 'वाहन सवार रेस्तराँ' शृंखला माना जाता है। सितंबर, 1921 में डलास (टेक्सास) में जेसी जी किर्बी व रूबेन जैक्सन नामक दो मित्र उद्यमियों ने इस शृंखला की शुरुआत की थी।

दिलचस्प तथ्य यह है कि मोटरवाहन कंपनियाँ सरकारी अनुदान से होनेवाले सड़क निर्माण से ही संतुष्ट नहीं हुई थीं। उन्होंने सहायक रेल सेवाट्राली कार की प्रतिस्पर्धा को पूरी तरह से ध्वस्त कर देने के लिए बहुत बड़ी साजिश को अंजाम दिया था। जी हाँ, 1920 की दशक के अंत में जनरल मोट्र्स से गोपनीय तरीके से टेक्सास, शिकागो, न्यूयॉर्क सिटी, लॉस एंजिल्स सहित अन्य बड़े नगरों में चलनेवाली 100 से अधिक ट्राली कार सेवा कंपनियों को अधिग्रहीत कर लिया था और फिर घाटे के बहाने से सारी कंपनियों को पूरी तरह बंद कर दिया था। रहस्यमय तरीके से इन सेवाओं की पटरियाँ व ऊपरी तारें ध्वस्त कर दी गई थीं और उन कंपनियों को बस-सेवा शृंखलाओं में बदल दिया था। जनरल मोट्र्स ने अमेरिका की ट्राली कार कंपनियों के महँगे अधिग्रहण की भरपाई-भुगतान के लिए सड़क निर्माण से लाभ कमानेवाली कंपनियों को पटा लिया था। 1947 में जनरल मोटर्स व उसे इस साजिश में मदद करनेवाली कंपनियों के खिलाफ अमेरिकी न्याय विभाग ने अविश्वास (एंटीट्रस्ट) मुकदमा भी शुरू किया था। संघीय न्यायपीठ (फेडरल जूरी) ने इस मामले में जनरल मोटर्स, मैक ट्रक, फायरस्टोन टायर व स्टैंडर्ड आयल को कुछ मामलों में दोषी भी माना था, लेकिन अंत में इन कंपनियों में हरेक को 5000 डॉलर व दोषी सरकारी पदाधिकारियों व कर्मचारियों में से हरेक को एक डॉलर का आर्थिक दंड सुनाया गया था। इस बीच, राष्ट्रीय व अंतर्राज्यीय राजमार्गों का निर्माण व मोटरवाहनों का उपयोग राष्ट्रीय तरक्की की पहचान बन गई थी। जल्द ही समूचे अमेरिका ने कार व त्वरित खाद्य (फास्टफूड) को अपनी जीवनशैली का अहम् हिस्सा बना लिया था और त्वरित खाद्य रेस्तराँ शृंखलाओं की बाढ़-सी शुरू हो गई थी।

त्वरित खाद्य रेस्तराँ शृंखलाओं का विकास : जब 1937 में मैकडोनाल्ड भाइयों द्वारा पासादेना में हॉटडॉग बेचनेवाली 'वाहन सवार रेस्तराँ' (ड्राइव-इन रेस्टोरेंट) शुरू किया था, उससे पाँच वर्ष पहले ही 1932 में, हॉलीवुड (लॉस एंजिल्स) के सनसेट बुलेवार्ड व वेरमोंट के कोने पर